प्रज्ञापनासूत्र भाग-३ (फोल्डर नं. ००१२२९)

मुख्य टाइटल
समर्पण
प्रकाशकीय
प्रस्तावना
विषयानुक्रम
पण्णवणासुत्तं
तेईसवाँ कर्मप्रकृतिपद
प्राथमिक ---------- ३
प्रथम उद्देशक
प्रथम उद्देशक में प्रतिपाद्य विषयों की संग्रहणी गाथा ---------- ९
प्रथम : कतिप्रकृतिद्वार ---------- ९
द्वितीय : कह वंधतिद्वार ---------- १०
तृतीय : कतिस्थानबंधद्वार ---------- ११
चतुर्थ : कतिप्रकृति वेदनद्वार ---------- १३
पंचम : कतिविध अनुभवद्वार ---------- १४
द्वितीय उद्देशक
मूल और उत्तर प्रकृतियों के भेद-प्रभेदों की प्ररूपणा ---------- २७
एकेन्द्रिय जीवों में ज्ञानावरणीयादि कर्मों की बंधस्थिति की प्ररूपणा ---------- ५६
द्वीन्द्रिय जीवों में ज्ञानावरणीयादि कर्मों की बंधस्थिति की प्ररूपणा ---------- ६६
त्रीन्द्रिय जीवों में ज्ञानावरणीयादि कर्मों की बंधस्थिति की प्ररूपणा ---------- ६७
चतुरिन्द्रिय जीवों में ज्ञानावरणीयादि कर्मों की बंधस्थिति की प्ररूपणा ---------- ६८
असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में ज्ञानावरणीयादि कर्मों की बंधस्थिति की प्ररूपणा ---------- ६९
संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों में ज्ञानावरणीयादि कर्मों की बंधस्थिति की प्ररूपणा ---------- ७१
कर्मों के जघन्य स्थितिबन्धकों की प्ररूपणा ---------- ७४
कर्मों की उत्कृष्ट स्थिति के बन्धकों की प्ररूपणा ---------- ७५
चौवीसवां कर्मबन्धपद
ज्ञानावरणीय कर्मबंध के समय अन्य कर्मप्रकृतियों के बंध की प्ररूपणा ---------- ७९
दर्शनावरणीय कर्मबंध के समय अन्य कर्मप्रकृतियों के बंध की प्ररूपणा ---------- ८१
वेदनीय कर्मबंध के समय अन्य कर्मप्रकृतियों के बंध की प्ररूपणा ---------- ८२
मोहनीय आदि कर्मबंध के समय अन्य कर्मप्रकृतियों के बंध की प्ररूपणा ---------- ८३
पच्चीसवां कर्मबन्ध-वेदपद
ज्ञानावरणीयादि कर्मबंध के समय कर्मप्रकृतिवेद का निरूपण ---------- ८६
छब्बीसवां कर्मवेद-बंधपद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञानावरणीयादि कर्मों के वेदन के समय अन्य कर्मप्रकृतियों के बन्ध का निरूपण ---------------- ८९
वेदनीय कर्म के वेदन के समय अन्य कर्मप्रकृतियों के बन्ध की प्ररूपणा -------------------------- ९२
आयुष्यादि कर्मवेदन के समय कर्मप्रकृतियों के बन्ध की प्ररूपणा ----------------------------------- ९४
सत्ताईसवां कर्मवेद-वेदपद
ज्ञानावरणीयादि कर्मों के वेदन के साथ अन्य कर्मप्रकृतियों के वेदन का निरूपण ----------------- ९६
अट्ठाईसवां आहारपद
प्राथमिक --- ९९
प्रथम उद्देशक
प्रथम उद्देशक में उल्लिखित ग्यारह द्वार -- १०२
चौवीस दण्डकों में प्रथम सचित्ताहार द्वार -- १०३
नैरयिकों में आहारार्थी आदि द्वितीय से अष्टम द्वार पर्यन्त ----------------------------------- १०३
भवनपतियों के सम्बन्ध में आहारार्थी आदि सात द्वार -- १०८
एकेन्द्रियों में आहारार्थी आदि सात द्वार -- ११०
विकलेन्द्रियों में आहारार्थी आदि सात द्वार --- ११२
पंचेन्द्रिय तिर्यंचों, मनुष्यों, ज्योतिष्कों एवं वाणव्यन्तरों में आहारार्थी आदि सात द्वार --- ११५
वैमानिक देवों में आहारादि सात द्वारों की प्ररूपणा --- ११६
एकेन्द्रियशरीरादिद्वार --- १२२
लोमाहारद्वार --- १२३
मनोभक्षीद्वार -- १२४
द्वितीय उद्देशक
द्वितीय उद्देशक के द्वारों की संग्रहणी गाथा --- १२६
प्रथम-आहारद्वार -- १२६
द्वितीय-भव्यद्वार -- १२८
तृतीय-संज्ञीद्वार --- १३०
चतुर्थ-लेश्याद्वार -- १३२
पंचम-दृष्टिद्वार -- १३४
छठा-संयतद्वार --- १३६
सातवाँ-कषायद्वार --- १३८
आठवाँ-ज्ञानद्वार --- १३९
नौवाँ-योगद्वार --- १४१
दसवाँ-उपयोगद्वार --- १४२
ग्यारहवां-वेदद्वार -- १४३
बारहवाँ-शरीरद्वार --- १४४
तेरहवाँ-पर्याप्तिद्वार -- १४५
उनतीसवां उपयोग पद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राथमिक ---------- १४८
जीव आदि में उपयोग के भेद-प्रभेद की प्ररूपणा ---------- १५२
जीव आदि में साकारोपयुक्तता-अनाकारोपयुक्तता-निरूपण ---------- १५५
तीसवां पश्यत्तापद
जीव एवं चौवीस दण्डकों में पश्यत्ता के भेद-प्रभेदों की प्ररूपणा ---------- १६०
जीव एवं चौवीस दण्डकों में साकारपश्यत्ता और अनाकारपश्यत्ता ---------- १६३
केवली में एक समय में दोनों उपयोगों का निषेध ---------- १६६
इकतीसवां संज्ञिपद
प्राथमिक ---------- १७१
जीव एवं चौवीस दण्डकों में संज्ञी आदि की प्ररूपणा ---------- १७४
बत्तीसवां संयतपद
प्राथमिक ---------- १७७
जीवों एवं चौवीस दण्डकों में संयत आदि की प्ररूपणा ---------- १७८
तेतीसवां अवधिपद
प्राथमिक ---------- १८१
तेतीसवें पद के अर्थाधिकारों की प्ररूपणा ---------- १८३
अवधि भेदद्वार ---------- १८३
अवधिविषयद्वार ---------- १८४
अवधिज्ञान का संस्थान ---------- १९०
आभ्यन्तर-बाह्य अवधिद्वार ---------- १९२
देशावधि-सर्वावधिद्वार ---------- १९३
अवधिक्षय-वृद्धि आदि द्वार ---------- १९४
चौतीसवां परिचारणापद
प्राथमिक ---------- १९७
चौतीसवें पद का अर्थाधिकार-प्ररूपण ---------- २०१
अनन्तराहारद्वार ---------- २०१
आहाराभोगताद्वार ---------- २०३
पुद्गल ज्ञानद्वार ---------- २०४
अध्यवसायद्वार ---------- २०७
सम्यक्त्वाभिगमद्वार ---------- २०८
परिचारणाद्वार ---------- २०९
अल्पबहुत्वद्वार ---------- २१२
पैंतीसवां वेदनापद
प्राथमिक ---------- २१५
पैंतीसवें पद का अर्थाधिकार-प्ररूपण ---------- २१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शीतादि वेदनाद्वार ---२१८
द्रव्यादि वेदनाद्वार ---२२०
शारीरादि वेदनाद्वार--२२१
सातादि वेदनाद्वार ---२२१
दुःखादि वेदनाद्वार --२२२
आभ्युपगमिकी और औपक्रमिकी वेदना ---२२३
निदा-अनिदा वेदना ---२२४
छत्तीसवां समुद्घातपद
प्राथमिक --२२७
समुग्घात के भेदों की प्ररूपणा --२२९
समुग्घात के काल की प्ररूपणा--२३१
चौवीस दण्डकों में समुद्घात-संख्या ---२३१
चौवीस दण्डकों में एकत्व रूप से अतीतादि-समुद्घात प्ररूपणा---२३३
चौवीस दण्डकों में बहुत्व की अपेक्षा अतीत-अनागत समुद्घात ---२३७
चौवीस दण्डकों की चौवीस दण्डक-पर्यायों में एकत्व की अपेक्षा अतीतादि समुद्घात---------------२४०
चौवीस दण्डकों की चौवीस दण्डक-पर्यायों में बहुत्व की अपेक्षा से अतीतादि समुद्घात------------२५३
विविध समुद्घात-समवहत-असमवहत जीवादि का अल्पबहुत्व ---२५८
चौवीस दण्डकों में छात्मस्थिक समुद्घातप्ररूपणा ---२७०
वेदना एवं कषाय समुद्घात से समवहत जीवादि के क्षेत्र, काल एवं क्रिया की प्ररूपणा ------------२७२
मारणान्तिक समुद्घात से समवहत जीवादि के क्षेत्र, काल एवं क्रिया की प्ररूपणा------------------२७५
तैजस समुद्घात-समवहत जीवादि के क्षेत्र, काल एवं क्रिया की प्ररूपणा -----------------------------२८०
आहारक समुद्घात-समवहत जीवादि के क्षेत्र, काल एवं क्रिया की प्ररूपणा----------------------------२८१
केवलिसमुद्घात-समवहत अनगार के निर्जीर्ण अन्तिम पुद्गलों की लोकव्यापिता---------------------२८३
केवलि-समुद्घात का प्रयोजन ---२८६
केवलि-समुद्घात के पश्चात् योगनिरोध आदि की प्रक्रिया ---२८८
सिद्धों के स्वरूप का निरूपण --२९४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org